शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2013

सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं तथा आन्तरिक सुरक्षा

डा.लखन सिंह कुशरे
सहायक प्राध्यापक, सैन्य विज्ञान
शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

शोध संक्षेप

सामाजिक एंव आर्थिक संतुलन किसी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। निःसन्देह देश की उन्नति एवं खुशहाली में सामाजिक-आर्थिक पहलुओं का बड़ा योगदान होता है जिसके बिना देश की चतुर्दिक प्रगति की कल्पना करना सम्भव नहीं है। सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएं समाज तथा राष्ट्र दोनों के समक्ष कई प्रकार की चुनौतियों एवं समस्याओं को जन्म देती हैं। परिस्थितिजन्य उत्पन्न होने वाली उक्त समस्याएँ न केवल राष्ट्र की प्रगति में बाधक हैं अपितु शांति एवं सुरक्षा की स्थायित्व के लिए भी एक गंभीर चुनौती हैं। आज भारत की आन्तरिक सुरक्षा के समक्ष कई गम्भीर खतरे हैं जिसमें अधिकांश प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से देश की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं की परिणति है।

प्रस्तावना

भारत कई धर्मों, जातियों, मान्यताओं, विभिन्न भाषा-भाषियों तथा विविध संस्कृतियों वाला देश है। यहां की संस्कृति में अनेकता में एकता के दर्शन होते है। सदियों से इसी सामाजिक ताने-बाने में बंधा भारत अनेक बाधाओं एवं चुनौतियों को सफलतापूर्वक लांघता हुआ 21वीं सदी में एक महाशक्ति बनने के दहलीज पर आ खड़ा है। बाह्य मोर्चे पर विशेषकर भारत की राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की दुनिया लोहा मान चुकी है। विश्व की महाशक्ति अमेरिका जिस वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी विकास के दम पर चांद पर बस्तियां बसाने की कल्पना कर रहा है उस सुनहरी कल्पना के पीछे भी नासा में 35 प्रतिशत भारतीय वैज्ञानिकों का मजबूत हाथ है। पिछले कुछ दशक में मजबूत आर्थिक विकास की वजह से भारत विश्व की चैथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।1 एशिया महाद्वीप के बाहर विश्व पटल पर भी भारत की अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर सक्रियता एवं सहभागिता बढ़ने लगी है। पूरा विश्व भारत को न केवल सैनिक अपितु राजनीतिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक व तकनीकी महाशक्ति के रुप में देख रहा है। भारत विश्व की एक बड़ी अपितु जिम्मेदार सैनिक महाशक्ति बन चुका है। भारत के नजरिये से यह सब सकारात्मक पहलू हैं जिनके कारण भारत आने वाले समय में एक विकसित एवं जिम्मेदार वैश्विक महाशक्ति बनने का स्वप्न संजोये हुये है। वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के इस बाजारवादी युग में भारत अन्य सभी देश के साथ आर्थिक प्रतिस्पर्धा में तेजी से दौड़ लगा रहा हैं। आर्थिक लाभ-हानि के समीकरण पर आधारित वैश्विक निवेश देश की आन्तरिक शांति एवं सुरक्षा वातावरण पर निर्भर करती है। अर्थात विकास और सुरक्षा एक दूसरे के पूरक हैं। भारत के समक्ष सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं के कारण आन्तरिक सुरक्षा से जुडे कुछ कठिन चिंतनीय एवं विचारणीय चुनौतियां तथा समस्याएं हैं जिनके तर्कपूर्ण एवं व्यवहारिक विश्लेषण कर समय रहते समाधान अथवा उपाय ढूँढना अनिवार्य है।

षोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रथम भाग में सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से आन्तरिक सुरक्षा को मिलती चुनौतीयों का वर्णन, दूसरे एवं अन्तिम

भाग में निष्कर्ष है। प्रस्तुत शोध पत्र को तैयार करने में कई विद्वान मनीषीयों के शोध आलेख, उनकी पुस्तके एवं इन्टरनेट पर वेबसाइट में प्रकाशित लेखों की मदद ली गई है।

सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से आन्तरिक सुरक्षा को मिलती चुनौती - नक्सलवाद- नक्सलवाद एक विचारधारा है जो मुख्यतः वर्ग संघर्ष पर आधारित है यह पिछड़ों, दलितों व शोषितों का शोषक वर्ग के विरुद्ध किया गया एक सशस्त्र विद्रोह है। जिसका मूल कारण सामाजिक आर्थिक शोषण है।2 भारत के प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने कहा है नक्सलवाद वर्तमान में देश की सबसे बड़ी आन्तरिक सुरक्षा चुनौती है। आज नक्सलवाद की आग में देश के 14 से अधिक राज्य सुलग रहें हैं। देश के कुल 640 जिलों में से 240 जिले नक्सल प्रभावित हैं, जिनमें लगभग 9300 माओवादी नक्सली सक्रिय हैं । देश के कुल क्षेत्रफल का 40 प्रतिशत भू-भाग नक्सल रेड कारीडोर क्षेत्र में आता है।3

क्रान्ति बंदूक की नली से निकलती है। आधुनिक गुरिल्ला युध्दकर्म के पितामह माउत्सेतुंग के इस कथन से वशीभूत होकर भारत के साम्यवादियों के एक छोटे से समूह ने देश में आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक बदलाव लाने के लिए हिंसा का मार्ग अपनाते हुए नक्सलवादी आन्दोलन की शुरुआत साठ के दशक में की।4 कितने आश्चर्य की बात है कि महात्मा बुध्द और गांधी के इस देश में हिंसा से क्रांति लाने के लिए नक्सलवाद का जन्म हुआ। नक्सलवाद की शुरुआत 1967 में पश्चिम बंगाल राज्य के सिलीगुडी जिला के नक्सलबाडी नामक स्थान से एक किसान विद्रोह के रूप में हुई थी, जो नेपाल सीमा से लगभग 8 किमी दूरी पर स्थित है। किसान विद्रोह के नेता चारु मजूमदार एवं कानू सान्याल के नेतृत्व में प्रारम्भ इस आन्दोलन का स्वरूप षुरुआत में सुधारवादी था। इसका उद्देश्य पिछड़ों, दलितों व जनजातियों की विभिन्न समस्याओं में सुधार करना था। इस हेतु इस संगठन ने पश्चिम बंगाल के चाय बगान के मालिकों और जमींदारों के विरुद्ध अपनी उचित मजदूरी दर के लिए संघर्ष भी किया।5 वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को उचित माप में जमीन मिले। मालिक और मजदूर एक समान हो, इनके बीच का मतभेद समाप्त हो जाए। 1975 में जब देश में आपातकाल लागू हुआ, तब कई उग्रवादी एवं अतिवादी संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसी क्रम में नक्सलवादी संगठनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। प्रारंभ में नक्सलवाद पश्चिम बंगाल तक ही सीमित था लेकिन धीरे धीरे पश्चिम बंगाल से निकलकर बिहार और बिहार के बाद आंध्र प्रदेश में 1980 के दशक में कामरेड कोण्डापल्ली सीतारमैया ने पीपुल्स वार ग्रुप नामक आतंकी नक्सली गुट का गठन किया। इस ग्रुप ने जंगलों के बीच में नौजवान ग्रामीणों को इकट्ठा कर उनके शोषण की कहानी नाच गाने और नौटंकी के जरिये उन्ही के मुंह से लोगो को सुनाना शुरू कर दिया जिससे उन्हें लोगों पर अपना विश्वास कायम करने में सफलता हासिल हुई। 1980 के बाद नक्सलवाद का विस्तार तेजी से देश के अन्य राज्यों, जिसमें बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, उ.प्र., महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेष आदि राज्यों में हुआ। राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग हुये अपने ही लोगों के संगठन नक्सलवाद के कारण सैकड़ों सुरक्षा कर्मी एवं निरापराध नागरिक व मासूम बच्चे अपनी

जाने गवां चुके हैं।

आतंकवाद- व्यापक दृष्टिकोण से विचार किया जाये तो आतंकवाद के मूल कारण हैं- असहनीय शोषण, असामान्य भेदभाव, नस्ल की श्रेष्ठता की अवधारणा, केवल मैं सही और सामने वाला गलत की भावना, दर्दनाक गरीबी और अज्ञानता, धर्मांधता की अति और सर्वाधिक महत्वपूर्ण अधिकांश के राजनैतिक अधिकारों का हनन एवं कुछ की व्यक्तिगत उच्चाकांक्षाएं। क्षेत्रवाद, अतर्कपूर्ण सीमा विवाद, ताकत के सहारे सत्ता पलट, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की खुली उपेक्षा, परिवारवाद, जातियों व समूहों के अपमान जैसे कारण भी इसके लिए उत्तरदायी हैं।6 गरीबी, निर्धनता एवं निरक्षरता के कारण आतंकवाद जैसी अमानवीय एवं कुत्सित कार्य के लिए बड़ी आसानी से आदमी मिल जाते हैं। ये लोग उनके लिए आसान चारागह हैं। जिनकी मजबूरी एवं लाचारी का फायदा उठाते हुए आतंकी अपने नेटवर्क को फैलाकर अपने मंसूबे को अंजाम देते हैं। भारत में मुस्लिम समाज अन्य के मुकाबले राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक रुप से काफी पिछड़ा हुआ है। आतंकवादी जेहाद, धर्म या सम्प्रदाय के नाम पर नवयुवकों को अपने आतंकी संगठन में भर्ती करते हैं। आतंकवाद का सबसे ज्यादा शिकार भारत रहा है। अब तक अकेले जम्मू-कश्मीर में 60,000 से ज्यादा जानें आतंकवाद की बलि चढ़ गई हैं। मुम्बई लोकल ट्रेनों में सीरियल बम बलास्ट 1993, भारतीय संसद पर हमला 2003, 19 फरवरी 2007 समझौता एक्सप्रेस विस्फोट, 25 जुलाई 2008 बंगलोर बम विस्फोट, 26 जुलाई 2008 अहमदाबाद बम विस्फोट, 26 नवम्बर 2008 मुम्बई आतंकवादी हमला जैसे दर्जनों छोटे-बड़े हमलों में हजारो भारतीय मासूमों की जाने जा चुकी हैं।

जातिवाद- जातिवाद सभ्य समाज के लिए एक कलंक है। प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था के सुचारु एवं सफल संचालन के लिए समाज को क्रमशः ब्राम्हण, क्षत्रीय, वैश्य एवं शूद्र वर्ण व्यवस्था में बांटा गया था। कालान्तर में यही व्यवस्था समाज और राष्ट्र के लिए विघटनकारी साबित हुई। आज भारतीय समाज जातिवाद की संकीर्ण एवं कुत्सित भावना से बंधा नजर आ रहा है। जिसकी जड़े इतनी गहरी हो गयी हैं कि सरकार एवं समाज की कोशिशों के बावजूद 21वीं सदी के युग में भी समाज और देश इससे जकड़ा हुआ प्रतीत होता है। जातिवाद एक अबाधित, अन्ध एवं सर्वोच्च समूह भक्ति है जो न्याय, औचित्य, समानता और विश्व-बंधुत्व की भावना की उपेक्षा करती है। इसमें कोई शक नहीं कि इस राष्ट्रीय समस्या ने संक्रामक रोग का रुप ले लिया है।7 जातिवाद के कारण समाज बंट जाता है जिससे समाज की संघटित एकता एवं शक्ति का हास होता है। राष्ट्र विरोधी ताकतों के लिए यह अनुकूल वातावरण है जिसमें समाज और देश को तोड़ने के लिए नाना प्रकार के असफल प्रयत्न कर सकते हैं। जातिवाद न केवल देश की आन्तरिक सुरक्षा बल्कि देश की एकता, अखण्डता और सामाजिक समरसता के लिए भी गंभीर खतरा है।

भ्रष्टाचार- बर्लिन स्थित भ्रष्टाचार निरोधक संस्था ट्रान्सपेरेंसी इण्टरनेषनल के अनुसार- निजी लाभ हेतु शक्ति के दुरुपयोग करने वाले कार्य को भ्रष्टाचार की संज्ञा दी गई है। सन् 2012 में विश्व के 176 देशों में भारत का स्थान 94वां है। भारत में भ्रष्टाचार निरोधक कानून 1988 में बनाया गया। भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए गठित

संथानम समिति के अनुसार- किसी सरकारी कर्मचारी द्वारा किसी लाभ के लिए कर्त्तव्य पालन में किया गया कोई कार्य या कार्य में विफलता भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार के विकराल फैलाव के संदर्भ में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि रघुवीर सहाय ने लिखा है कि भ्रष्टाचार में हमेशा से एक सर्वग्राही प्रक्रिया छुपी रही है। वह लोकतंत्र, स्वतंत्रता, सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करने वाले तत्वों से जुड़ा रहता आजाद भारत के कुछ चर्चित घोटालें निम्न हैं :–

है, और समाज एक-एक कदम पतनशील राह पर बढ़ता जाता है।8 नवीनतम आंकड़ों के अनुसार स्विस बैंकों में भारतवासियों के लगभग 1456 अरब डालर जमा हैं, जो कि मात्रा के हिसाब से विश्व के अन्य देशों की तुलना में सर्वाधिक है। भ्रष्टाचार एक दीमक की तरह है जो धीरे-धीरे समाज व देश को खोखला कर सकता है।

स. क्र.	घोटाले का नाम	वर्ष	धनराशि (करोड़ में)	सम्बन्धित व्यक्ति/संस्था
1	सेना के लिए जीप व रायफलें	1948	30	बी.के.कृष्णमेनन, लन्दन में तत्कालीन उच्चायुक्त
2	मूंदड़ा काण्ड	1957	3	जीवन बीमा निगम
3	मारुति उद्योग को 300 एकड़ जमीन देने का मामला	1975	100	संजय गांधी, बंशीलाल (मुख्यमंत्री)
4	बोफोर्स तोप	1987	68	क्वात्रोची, हिन्दुजा बंधु, बिनचढ्ढा
5	एच.डी.डब्लू.पनडुब्बी	1987	10	राजीव गांधी
6	चेक पिस्तौल घोटाला	1987	10	अरुण नेहरू
7	धर्मार्थ चिकित्सालयों को उपकरण	1988	5000	वी. शंकरानंद तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री
8	कोयला घोटाला	1989	50	फर्टिलाइजर कारपोरशन, टाटा समूह
9	एयर बस खरीद मामला	1991	200	तत्कालीन नागरिक उड्डयन मंत्री
10	राजस्थान भूमि घोटाला	1991	500	तत्कालीन मुख्यमंत्री, रिश्तेदार
11	शेयर घोटाला	1992	4000	हर्षद मेहता व अन्य
12	लोकोमोटिव इंजन खरीद घोटाला	1993	19	सी.के.जाफरषरीफ (रेलमंत्री)
13	चीनी घोटाला	1993	1200	कल्पनाथ राय (केन्द्रीय मंत्री)
14	जयललिता राज में नौ घोटाले	1993	2000	मुख्यमंत्री जयललिता व अन्य
15	झारखण्ड मुक्ति मोर्चा रिश्वत मामला	1993	3.5	नरसिम्हाराव, सतीष शर्मा, बूटा सिंह व अन्य
16	महाराष्ट्र जूता घोटाला	1993	1500	सुषील कुमार शिन्दे व अन्य

17	उ.प्र. आयुर्वेद घोटाला	1993	72	मंत्री बलराम यादव व अन्य
18	संचार घोटाला	1995	100000	केन्द्रीय मंत्री सुखराम व अन्य
19	पेट्रोल पंप व सरकारी आवास आवंटन	1995	100	कैप्टन सतीश शर्मा व शीला कौल
20	जैन हवाला काण्ड	1995	65	जैन बंधु व अन्य कई मंत्री
21	बिहार चारा घोटाला	1996	950	लालूप्रसाद यादव व अन्य
22	यूरिया घोटाला	1996	133	नरसिम्हाराव के पुत्र, रामलखन यादव के पुत्र व टर्की का फर्म करसन
23	बोमाडिला हीरा खान	1996	5000	म.प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री
24	सी.आर.वी.कैपिटल घोटाला	1997	1200	अध्यक्ष मसाली व निदेशक मण्डल
25	ताबूत खरीद घोटाला	1999	7	रक्षामंत्री जार्ज फर्नाडीज
26	तहलका काण्ड	2001	अनुपलब्ध	भाजपा अध्यक्ष बंगारु लक्ष्मण, जया जेटली
27	स्टाक मार्केट मामला	2002	1,15000	स्टाक ब्रोकर केतन पारीख
28	जूदेव रिश्वत काण्ड	2003	अनुपलब्ध	केन्द्रीय मंत्री दिलीप सिंह जूदेव
29	स्टाम्प घोटाला	2003	20,000	अब्दुल करीम तेलगी व अन्य
30	सत्यम घोटाला	2008	14,000	रामलिंगम राजू व अन्य
31	मनी लांडरिंग	2009	4000	मधु कोड़ा व अन्य
32	हसन अली टैक्स चोरी मामला	2010	40,000	हसन अली घोड़ा व्यापारी
33	आईपीएल घोटाला	2010	अनुपलब्ध	ललित मोदी, सुनंदा व शशि थरुर
34	ताज कोरीडोर कांड	2010	17	मायावती व अन्य
35	कामनवेल्थ खेल घोटाला	2010	60000	सुरेश कल्माड़ी व अन्य
36	यूटीआई घोटाला	2011	48000	पी.एस. सुब्रमण्यम व अन्य
37	2जी घोटाला	2011	1,76000	केन्द्रीय दूरसंचार मंत्री ए राजा व अन्य
38	कोयला आवंटन घोटाला	2012	1,86000	केन्द्रीय सरकार के मंत्री

निर्धनता- आज भारत विश्व की एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति बनकर उभर रहा है और सकल घरेलू उत्पाद दर औसतन 8 प्रतिशत से अधिक है। बावजूद इसके समाज में गरीबी का प्रतिशत अत्यधिक है। सरकारी आंकड़े के अनुसार भारत में लगभग 40 करोड़ लोग गरीबी रेखा के अन्तर्गत आते हैं। भारत जैसे देश में एक मनुष्य की मात्र तीन आवश्यकताएं हैं- रोटी, कपड़ा और मकान। लेकिन बहुत से ऐसे परिवार हैं जिनकी ये तीनों आवश्यकताएं पूरी नहीं हैं। जो भूख की ज्वाला से छटपटा रहा हो अथवा मूसलधार वर्षा में भीग रहा हो या नग्न घूम रहा हो, भला ऐसा

व्यक्ति राष्ट्र के बारें में क्या सोच सकता है?10 निर्धन व्यक्ति अपनी निर्धनता और मजबूरी के कारण कोई भी कार्य करने को आसानी से सहमत हो जाता है जिसमें उसे लाभ हो फिर वह काम समाज के सुरक्षा हितों के विपरीत ही क्यों न हो। भारत में शरणार्थी समस्या की बड़ी वजह निर्धनता एवं रोजगार की तलाष है। अनुमानतः 2 करोड़ से अधिक बंगलादेशी भारत के विभिन्न राज्यों में रह रहे हैं। गरीबी में जी रहे व्यक्ति से सुरक्षा के प्रति जागरुकता की उम्मीद रखना बहुत कठिन है क्योंकि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति पहले अपने परिवार व स्वयं के पेट में लगी भूख की आग को शांत करना है। मानवीय दृष्टि से यह स्थिति बड़ी विचित्र एवं मार्मिक है।

जनसंख्या वृद्धि- भारत में बढ़ती जनसंख्या एक विकराल समस्या है। कोई भी योजना या नीति तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक हम अनावश्यक बढ़ती जनसंख्या के दबाव को नियंत्रित एवं सीमित नहीं कर लेते। जनसंख्या नियंत्रण के सरकार के तमाम दावे एवं कोशिश की पोल जनगणना 2011 के आंकड़े बताते हैं। बीते एक दशक में 17.64 फीसदी की दर से अर्थात 18.1 करोड़ बढ़कर देश की आबादी 1.21 अरब हो गई।11 जनसंख्या विस्फोट के कारण इतनी बड़ी आबादी का कुशल प्रबन्धन बड़ी चुनौती है। भारत के वर्तमान स्थिति के संदर्भ में बढ़ती जनसंख्या सभी समस्याओं की जननी प्रतीत हो रही है। निर्धनता, बेरोजगारी, मंहगाई, भ्रष्टाचार, निरक्षरता, शोषण, श्रम विवाद जैसे न जाने कितनी ही समस्याओं की मूल जड़ जनसंख्या वृद्धि है। व्यक्ति की सामाजिक एंव आर्थिक स्थिति का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव भी देश की बढ़ती आबादी के लिए जिम्मेदार है।

बेरोजगारी- बेरोजगारी की समस्या जितनी रोजगार चाहने वालों के लिए है, उससे अधिक सरकार और समाज के लिए है। कुंठित बेरोजगार युवा अपराधों में संलिप्त होते जा रहें हैं कश्मीर इसका ज्वलंत उदाहरण है।12 शिक्षित बेरोजगार युवा आज नक्सलवाद, आतंकवाद या अन्य गैर कानूनी कार्य में लिप्त पाये जा रहे हैं। नेशनल कमीशन फार एन्तार्प्रेन्युर्स इन द अनआर्गनाइज्ड सेक्टर के अनुसार भारत में 77 फीसदी लोग 20 रुपये प्रति दिन से कम में गुजर करते हैं।13 भारत में लगभग 20 करोड़ से ज्यादा लोग बेरोजगार हैं। बेरोजगारी की समस्या के कारण उत्पन्न होने वाली सुरक्षा चुनौतियां बेहद घातक हैं। बाह्य घुसपैठ बिना आन्तरिक मदद के सम्भव नहीं है जिसमें हमारे बेरोजगार युवाओं की संलिप्तता पाई जा रही है। आतंकवादी या अन्य विघटनकारी संगठन बेरोजगार लोगों की गरीबी एवं मजबूरी का फायदा उठाते हुए चंद रुपये के लालच में बड़ी आसानी से मनचाहा कार्य करवा लेते हैं।

मादक पदार्थ एवं अवैध हथियारों का व्यापार- युवा समाज ओर देश के उज्जवल भविष्य होते हैं, जिनके कंधों पर भविष्य के उत्तरदायित्व का भार होता है। युवाओं को देखकर ही परिवार, समाज और राष्ट्र स्वर्णिम भविष्य की कल्पना करता है। परन्तु युवा वर्ग के कंधे मजबूत होने के बजाय कमजोर व असहाय होने लगे तो यह एक चिंतनीय एवं विचारणीय स्थिति है। पंजाब, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखण्ड, उ.प्र., बिहार, पश्चिम बंगाल, एवं उत्तर पूर्व के सीमान्त राज्यों की सीमावर्ती क्षेत्र नशीले पदार्थों एवं अवैध हथियारों का सुपर माल बनते जा रहें हैं। जिनमें बड़ी संख्या में युवा लिप्त हैं। कोकीन, अफीम, गांजा,

चरस, हेरोइन, ब्राउन शुगर की पहुंच अब स्कूल-कालेज तक हो गई है। पिछले कुछ वर्षों में देश में मादक पदार्थों की तस्करी में अत्यधिक वृद्धि आई है। अफगानिस्तान विश्व के कुल अफीम का लगभग 50 प्रतिशत तक अकेला ही उत्पादन करता हैं।14 वहीं पाकिस्तान व अफगानिस्तान दोनों मिलकर विश्व के कुल अफीम का लगभग 70 प्रतिशत तक उत्पादन करते हैं। यही अफीम आतंकवादी संगठनों के आर्थिक तंत्र की प्राणवायु है। सुरक्षा सूत्रों के अनुसार भारत में नक्सल व आतंकवादियों को नेपाल व बांग्लादेश के रास्ते हथियारों की आपूर्ति की जाती है। स्थानीय युवाओं को पहले नशीले पदार्थों का आदि बनाया जाता है फिर उनकी आदतन मजबूरी का फायदा अवैध तस्करी के लिए उपयोग किया जाता है। अब तो मादक पदार्थ एवं अवैध हथियारों के व्यापार का जाल पूरे देश में फैल चुका है।

निष्कर्ष- उपरोक्त बिन्दुओं एवं तथ्यों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि आज भारत के समक्ष सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति के कारण परिस्थितिजन्य ढेरों आन्तरिक सुरक्षा समस्याएं एवं चुनौतियां हैं जिनके कारण देश की आन्तरिक शान्ति एंव सुरक्षा गहरे हद तक प्रभावित व बाधित हो रही है। अधिकांश समस्याओं की जड़ सरकार की दोषपूर्ण एवं तुष्टीकरण नीति, राजनीतिक प्रतिबद्धता एवं इच्छाशक्ति का अभाव, सरकार और जनता के बीच विश्वास की कमी, योजनाओं के पारदर्शी व जवाबदेही क्रियान्वयवन का अभाव, वोट बैंक की राजनीति, भ्रष्टाचार, आम जनता में जागरुकता की कमी इत्यादि कारण हैं जिसके चलते आज देश के सामने समस्याओं का अम्बार लग गया है। विकास, प्रगति व खुशहाली का सीधा सम्बन्ध शांति एवं सुरक्षा के दीर्घकालीन स्थायित्व से है। उक्त समस्याओं के समाधान की दिशा में एकजुट एवं समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है। प्राचीन भारत के राजनीति एवं कूटनीति शास्त्र के विद्वान आचार्य कौटिल्य ने कहा है कि अभ्यन्तर कोप घर में पल रहे सांप की तरह है जोकि बाह्य कोप से कहीं अधिक खतरनाक व अनिष्टकारी होता है। यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. bbc.co.uk/hindi/busuness आर्थिक सर्वेक्षण, 15 मार्च 2012
2. मेश्राम, सुनील -नक्सल क्षेत्र बस्तर में सलवा जुडम, नक्सलवाद के मुकाबले का जन आन्दोलनः सलवा जुडुम, रामभाऊ म्हालगी प्रबोधनी, सस्करण-1, पृष्ठ-36
3. पाण्डे, डा. गिरिश कान्त - छत्तीसगढ़ में नक्सली आतंकः विष्लेषणात्मक अध्ययन, नक्सलवाद के मुकाबले का जन आन्दोलन सलवा जुडुम, रामभाऊ म्हालगी प्रबोधनी, संस्करण-1, पृष्ठ-12-13
4. खण्डेकर, शिवकुमार - छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद, नक्सलवाद के मुकाबले का जन आन्दोलनः सलवा जुडुम, रामभाऊ म्हालगी प्रबोधनी, सस्करण-1, पृष्ठ-24
5. पूर्वोक्त संदर्भ क्र.2, पृष्ठ-36
6. खंडेला, मान चंद -अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद, अविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण 2002, पृष्ठ-3
7. सिंह, डा. अशोक कुमार -राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम, प्रदीप पब्लिकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- 62-63
8. राज किशोर द्वारा संकलित भ्रष्टाचार की चुनौती में प्रियदर्शन का लेख, एक सर्वग्राही प्रक्रिया, पृष्ठ-84
9. विकीपीडिया
10. hindi.webduniya.com में लेख 1 अप्रैल 2011
11. सिंह, लल्लन जी सिंह - राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा, संस्करण-2003, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, पृष्ठ-153
12. पूर्वोक्त संदर्भ सं.11, पृष्ठ-154
13. youthkiawaazhindi.blogspot.in में लेख 28 मार्च 2009
14. पूर्वोक्त संदर्भ सं. 6, पृष्ठ-93